प्रकाशन तिथि : 15 जून, 2020
प्रेषण तिथि : 19 जून, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 07 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संत सानिध्य एवं परमहंस जी की पुण्यतिथि

पूज्य स्वामीजी अड़गड़ानंद जी महाराज के गुरु परमहंस जी महाराज की पुण्यतिथि 1 जून को बाड़मेर के महाबार स्थित आश्रम में मनाई गई जिसमें माननीय संघ प्रमुख श्री भी पहुंचे एवं संत सानिध्य का लाभ लिया। संघ प्रमुख श्री के साथ सीमित संख्या में स्वयंसेवक भी गए एवं भौतिक दूरी के निर्देशों का पालन करते हुए सत्संग में शामिल हुए। 5 जून को महाबार आश्रम में प्रवास कर रहे संतगण श्री अकेलानंद जी महाराज, श्री लालदेव जी महाराज एवं अन्य बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम पधारे एवं माननीय संघ प्रमुख श्री संग भगवद् चर्चा की। संतगण सूर्यादय पूर्व ही पधार गए एवं अल्पाहार के बाद 10 बजे तक रुके। इस दौरान पूज्य स्वामी जी, यथार्थ गीता आदि विषयों पर अनौपचारिक चर्चा हुई।

केन्द्रीय मार्गदर्शन की वर्चुअल शाखा

13 मई से केन्द्रीय स्तर पर प्रारंभ हुई वर्चुअल शाखा निरन्तर जारी है। 'साधक की समस्याएं' पुस्तक के प्रकरण 'अहं के नये रूप' एवं 'सुरक्षा का भय' पर विगत पखवाड़े में चर्चा की गई। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह जी सरवड़ी ने संघ मार्ग पर निर्विकार अनासक्ति, फलासक्ति, श्रद्धा, विश्वास, संगठन के चरित्र, कर्मयोग, सांख्य योग, चिंतनधारा की नकारात्मकता, संगठनकर्ता के दायित्व, कर्म जन्य और ज्ञान जन्य अहंकार, तर्क और निर्माण, कर्म और भ्रम, अहंकार और अज्ञान, विनय और अकिंचनता, अहंकार की पहचान, अहंकार के निरोध के उपाय, सतर्कता, स्वयं की गुप्तचरी, अहंकार के विरुद्ध त्रिस्तरीय किलेबंदी, शिष्टाचार और बाह्य आचरण, निरोधित पशुत्व, प्राण रक्षात्मक प्रवृत्तियां, उत्सर्ग के मूल में स्थित भय, आभासी व यथार्थ भय, आवश्यकताएं और उनकी सीमाएं, युद्ध का मूल, तत्परता और कर्मठता, नित्य एवं अपरिवर्तनशील एकता, अभाव और भय, सुरक्षा के भय और विज्ञान, न्यूनतम आवश्यकताएं और संघ, सुरक्षा के भय से मुक्ति के उपाय आदि विषयों की विस्तार से विवेचना की। इस विषय में स्वयंसेवकों के प्रश्नों के भी निरन्तर जवाब दिए जाते रहे।

दूसरी तरफ पूज्य तनसिंह जी की पुस्तक 'गीता और समाज सेवा' पर माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा का निरन्तर मार्गदर्शन मिलता रहा। उन्होंने इस दौरान 'गीता में अनुभूति', 'गीता का सरल मार्ग' एवं 'क्षात्रधर्म' प्रकरण की विवेचना की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विभिन्न विषयों पर लाईव वेबिनार

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के फेसबुक पेज के माध्यम से विभिन्न विषयों पर लाईव वेबिनार आयोजित की गई। पहली वेबनार 31 मई को प्रातः 10 बजे आयोजित की गई जिसमें बाड़मेर, पदस्थापित सामाजिक सुरक्षा अधिकारी सुरेन्द्र प्रताप सिंह झिंझनियाली ने समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित पेंशन योजनाओं यथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना, मुख्यमंत्री वृद्धजन सम्मान पेंशन योजना, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना, मुख्यमंत्री एकल नारी सम्मान पेंशन योजना, इंदिरा गांधी निशक्त जन पेंशन योजना, मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन सम्मान पेंशन सहित पालनहार योजना व सहयोग/उपहार योजना की जानकारी दी। वेबिनार में फाउंडेशन के सहयोगी भी जुड़े एवं उन्होंने इन योजनाओं से संबंधित प्रश्न पूछे जिनके कार्यक्रम के दौरान ही उत्तर दिए गए। यह लाईव डिस्कशन अभी भी पेज पर उपलब्ध है एवं लोग लाभ ले रहे हैं।

इसी क्रम में 7 जून रविवार को प्रातः दस बजे इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों के लिए सूचना तकनीक क्षेत्र में संभावनाओं पर लाईव वेबिनार आयोजित की गई जिसमें महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. नरेन्द्रसिंह, वरिष्ठ आइ.टी. इंजीनियर पवनसिंह बिखरणिया, नरेन्द्रसिंह छापरी, दीपेन्द्रसिंह पलाड़ा सहित इंजीनियरिंग क्षेत्र के विद्यार्थी व फाउंडेशन के केन्द्रीय टीम के सहयोगी जुड़े। बीकानेर इंजीनियरिंग कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर राजेन्द्रसिंह शेखावत ने इसके लिए सभी विद्यार्थियों का समन्वय किया एवं स्वयं भी वेबिनार में उपस्थित रहे। कुलपति महोदय ने वर्तमान समय में इस प्रकार के लाईव इवेंट का महत्व समझाते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि समाज में इस प्रकार के मार्गदर्शन का कार्य चल रहा है। उन्होंने सूचना तकनीक क्षेत्र में नवीन संभावनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पवनसिंह बिखरणिया ने बताया कि इस क्षेत्र में रोजगार के लिए तीन बातें महत्वपूर्ण है। पहला कम्युनिकेशन स्किल (संवाद कला), एप्टीट्यूड (समस्या समाधान की योग्यता) एवं बेसिक नॉलेज (विषय का ज्ञान)। उन्होंने कहा कि इन तीनों का वरीयता क्रम भी यही है। सर्वाधिक आवश्यक कम्युनिकेशन स्किल है, उसके लिए कॉलेज में पढ़ते समय ही तैयारी करनी चाहिए।

(समाज कल्याण विभाग की योजनाएं)

(सूचना तकनीक क्षेत्र में अवसर)

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

पूज्य तनसिंह जी का राजनीतिक जीवन अपने आप में अनूठा था, उनके उस जीवन की छोटी-छोटी बातें केवल राजनीतिज्ञों के लिए ही नहीं बल्कि सरकारी सुविधाओं के लिए पात्र सभी लोगों के लिए विशेष प्रेरणादायी हैं। ऐसी ही एक घटना इस बार प्रस्तुत है।

संघ के एक स्वयंसेवक के रिश्तेदार को एक जीप खरीदनी थी। वे अपने उन रिश्तेदार को लेकर दिल्ली गए और पूज्य तनसिंह जी के पास उनके सरकारी आवास में रुके। चार दिन बाद पूज्य श्री का जोधपुर आने का कार्यक्रम बना तो उन्होंने उक्त स्वयंसेवक को बुलाकर कहा कि दो दिन बाद हम जोधपुर जा रहे हैं इसलिए आप लोगों को उसके बाद कहां रुकना है, देख लेना। उक्त स्वयंसेवक ने निवेदन किया कि आप भले ही पधार, हमें बता देवें चाबी कहां देनी है, हम फ्लैट बंद कर चाबी वहां दे देंगे। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि दिल्ली में होटल वाले भी मुसाफिरों का इंतजार करते हैं। यह फ्लैट जनता के पैसों से बना है और जनता के काम के लिए है। दिल्ली घूमने आने वालों या सामान खरीदने आने वालों के लिए नहीं है। हमने यह नियम बना रखा है कि हमारी उपस्थिति में जो भी यहां आएगा वह हमारे साथ यहां रुक सकता है और हम उक्त समय में उसकी खातिरदारी भी करेंगे। लेकिन हमारी अनुपस्थिति में इसे धर्मशाला या होटल का स्वरूप देने के लिए सरकार ने मुझे आवंटित नहीं किया है। पूज्य श्री का यह जवाब हम सबके लिए नजीर है जो हमें मिलने वाली सरकारी सुविधा को हम हमारा अधिकार मानकर उसके मालिक बनते हैं। एक अतिशय जागरुक व्यक्ति ही अपने जीवन में पल-पल पर ऐसी जागरुकता रख सकता है और यह जागरुकता ही प्रेरणा का स्रोत बनकर उन्हें महानता की सीमाओं से परे ले जाती है। जिस नीर्विकार आसक्ति की बात उन्होंने 'साधक की समस्याएं' पुस्तक में की है, वह यही है। अपने उस साथी से उनके प्रेम में कोई कमी नहीं थी, अंतरंगता में भी कमी नहीं थी लेकिन वह निर्किकार थी इसलिए मर्यादा से किंचित भी बाहर नहीं थी। ऐसी निर्विकारता ही आसक्ति को आगे बढ़ाने में सहायक बना सकती है अन्यथा तो साधना मार्ग में आसक्ति को बाधक ही माना जाता है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

CAPF (AC) EXAM

इस परीक्षा का पूरा नाम 'सेन्ट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेज (असिस्टेंट कमांडेंट) एग्जाम' है। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस परीक्षा के माध्यम से केंद्रीय सशस्त्र पुलिस सेवाओं में असिस्टेंट कमांडेंट नामक राजपत्रित अधिकारी के रूप में नियुक्ति हेतु अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली इन पुलिस सेवाओं को पैरामिलिट्री के नाम से भी जाना जाता है। CAPF (AC) परीक्षा द्वारा पैरामिलिट्री की जिन 5 शाखाओं हेतु अधिकारियों का चयन किया जाता है, वे इस प्रकार हैं- CISF (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल), CRPF (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल), BSF (सीमा सुरक्षा बल), ITBP (इंडो तिब्बत बॉर्डर पुलिस) तथा SSB (सशस्त्र सीमा बल)।

इस परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थी की न्यूनतम आयु 20 वर्ष तथा अधिकतम आयु 25 वर्ष है। न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के रूप में मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से स्नातक डिग्री प्राप्त होना आवश्यक है। अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी आवेदन कर सकते हैं।

यह परीक्षा तीन चरणों में सम्पन्न होती है-

(i) लिखित परीक्षा - इसके अंतर्गत दो प्रश्नपत्र होते हैं-

(अ) सामान्य योग्यता व बुद्धिमत्ता (General Ability and Intelligence) : यह प्रश्नपत्र बहुवैकल्पिक प्रकार का होता है। यह प्रश्नपत्र 250 अंको का होता है तथा अंग्रेजी व हिंदी दोनों माध्यम में उपलब्ध होता है। इसकी अवधि दो घंटे होती है।

(ब) सामान्य अध्ययन, निबंध व सामान्य बोध (General Studies, Essay and Comprehension) : यह विवरणात्मक प्रकार का प्रश्न पत्र होता है। इसमें निबंध लिखने हेतु अंग्रेजी अथवा हिंदी में से किसी एक भाषा का चयन करना होता है किंतु अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में देना अनिवार्य है। यह 200 अंक का होता है। इसकी अवधि तीन घंटे होती है।

(ii) **शारीरिक दक्षता परीक्षण तथा चिकित्सकीय जांच:-** इसके अंतर्गत लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों की शारीरिक दक्षता तथा स्वास्थ्य की जांच की जाती है। इस दौरान अभ्यर्थी को दौड़, लंबी कूद, गोला फेंक आदि परीक्षणों से गुजरना होता है।

(iii) **व्यक्तित्व परीक्षण/साक्षात्कार-** शारीरिक दक्षता परीक्षण व चिकित्सकीय परीक्षण में सफल अभ्यर्थियों का संघ लोक सेवा आयोग द्वारा गठित बोर्ड द्वारा साक्षात्कार लिया जाता है। इसके लिए कुल 150 अंक निर्धारित हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

मुखड़ोजी गोहिल

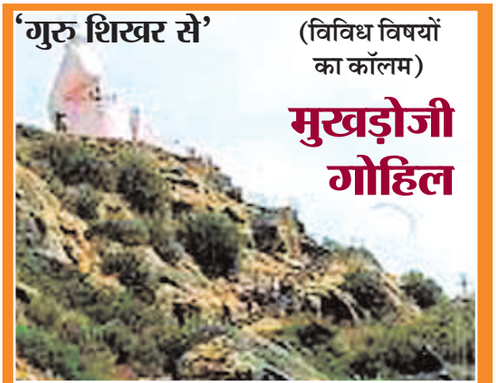

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

मुखड़ोजी गोहिल सौराष्ट्र के घोघा पीरमबेट के शासक थे। मुखड़ो जी ने गोहिलवाड़ की स्थापना की जिसकी कालान्तर में भाव नगर राजधानी रहा। मुखड़ों जी के पितामह सेजगजी ने मारवाड़ के खेड़ नगर से आकर सौराष्ट्र में चुड़ासमा राजपूतों के सहोयग से ई. 1250 में सेजकपुर नामक नगर बसाया। सेजगजी के पुत्र राणजी ने 1290 में राणपुर नगर बसाया। 1309 में राणजी गाहिल के पुत्र के रूप में मुखड़ो जी का जन्म हुआ। मुखड़ो जी बहुत ही वीर बहादुर नायक थे। उन्होंने घोघा एवं पीरम बेट को अपनी राजधानी बनाया। घोघा व पीरमबेट के आसपास का क्षेत्र वाला राजपूतों बारिया कोलियो व मुस्लिमों के अधीन था। जिन्हें मुखड़ों जी ने हराया। मुखड़ो जी गोहिल के पुत्र डूंगरसिंह ने भावनगर एवं दूसरे पुत्र समरसिंह ने राजपीपला का राज्य स्थापित किया।

पीरमबेट अरब सागर के पास खम्भात की खाड़ी के मध्य स्थित एक टापू है। इसके चार मील पश्चिम में घोघा है तथा पूर्व में भरूच एवं सूरत है। पीरमबेट पर एक नरभक्षी शेर रहता था जिसे मारकर मुखड़ों जी ने 'पीरम का पातशाह' की उपाधि पाई तथा ई. 1330 में पीरम बेट को अपनी राजधानी बनाया। पीरमबेट गुजरात एवं सौराष्ट्र के मध्य समुद्री मार्ग पर स्थित था। अरब ईरान-ईराक आदि से आने वाले व्यापारिक जहाज भी खम्भात की खाड़ी में से पीरम बेट होकर गुजरते थे। यहां समुद्री व्यापारिक जहाज समुद्री लुटेरों द्वारा लूट लिए जाते थे। मुखड़ों जी ने लुटेरों को मार भगा कर व्यापारियों को अभय दान दिया। मुखड़ो जी इन जहाजों की सुरक्षा करते एवं बदले में कुछ कर वसूलते थे।

ई. 1347 में से दिल्ली के सुल्तान का व्यापारिपक जहाज पीरमबेट से गुजरा। उस समय दिल्ली पर मुहम्मद बिन तुगलक का शासन था। बादशाह के मद में जहाज के कप्तान द्वारा कर देने से मना करने पर मुखड़ो जी ने जहाज को रोक दिया। जब यह बात तुगलक को दिल्ली में पता चली तो एक बड़ी फौज लेकर सौराष्ट्र की ओर निकल पड़ा। घोघा के पास मुखड़ों जी अपने कुछ सैनिकों के साथ तुगलक की विशाल फौज से आ भिड़े। हर-हर महादेव के जयकारों के साथ राजपूत शूरवीर तुगलक सेना को गाजर मूली की तरह काटने लगे। मुखड़ो जी अपने पूर्वजों याद कर मां कालीका की जय के साथ दोनों हाथों में तलवार चलाते भूखे शेर की तरह दुश्मनों पर टूट पड़े। खून के नालों से खम्भात की खाड़ी का पानी सिन्दूरी हो गया। आज भी वहां की धरती खून से लाल रंग की सी दिखती है।

मुस्लिम सैनिकों ने वीर मुखड़ो जी पर लड़ते वक्त पीठ पीछे से वार किया। उनका सिर धड़ से अलग हो गया। परन्तु धड़ दोनों हाथ से तलवार चलाता रण में हाहाकार मचा रहा था। यह देख मुस्लिम सेना भय से कांप उठी। उसके सैनिक रण क्षेत्र से भागने लगे। सेना में हाहाकार मच गया। मुखड़ो जी का रोद्र रूप धड़ उन्हें साक्षात यमराज लगने लगा। मुखड़ो जी के धड़ ने लड़ते हुए कई किलोमीटर तक भागती तुगलक सेना का पीछा किया।

अन्त में उन पर मलैच्छो द्वारा गुली (स्याही नील) फैंकने पर धड़ शान्त होकर गिर पड़ा। मुखड़ो जी गोहिल का सिर घोघा में गिरा था तथा धड़ वहां से 25 किमी दूर खदरपर में जाकर शान्त हुआ। सिर एवं शरीर जहां पर गिरे वहां दोनों जगह मुखड़ो जी के मंदिर बने हुए हैं। जहां उनकी पूजा की जाती है। उन्हें पीर दादा के नाम से जाना जाता है। वे लोगों की मन्नतें पूरी करते हैं।

मुखड़ों जी की वीरता से गोहिलवाड़ एवं पीरम बेट धन्य हो गए। फिर बरसों तक मुस्लिम गोहिलवाड़ की तरफ आंख भी उठा नहीं पाए। खम्भात की खाड़ी में पानी के मध्य बसे इस टापू पीरम बेट पर श्री क्षत्रिय युवक संघ का ग्रीष्मकालीन शिविर भी लग चुका है। वीर मुखड़ो जी गोहिल की जीवन गाथा को चारणों ने खूब स्वर दिया। कवि काक ने उनका बखान किया है। काठियावाड़ गुजरात में उन्हें श्रेष्ठ राजपूत वीरों में सिरमौर माना जाता है।

'जय वीर मुखड़ो जी गोहिल दादा'

ऑनलाईन बैठकें कर समीक्षा की

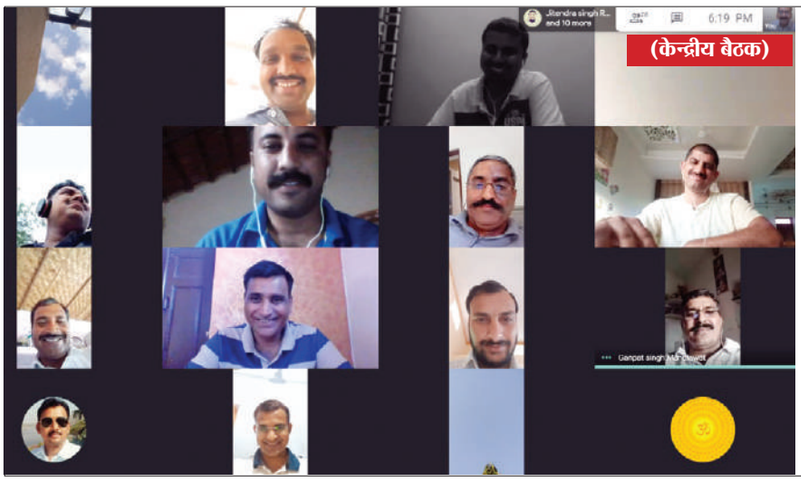
(केन्द्रीय बैठक)

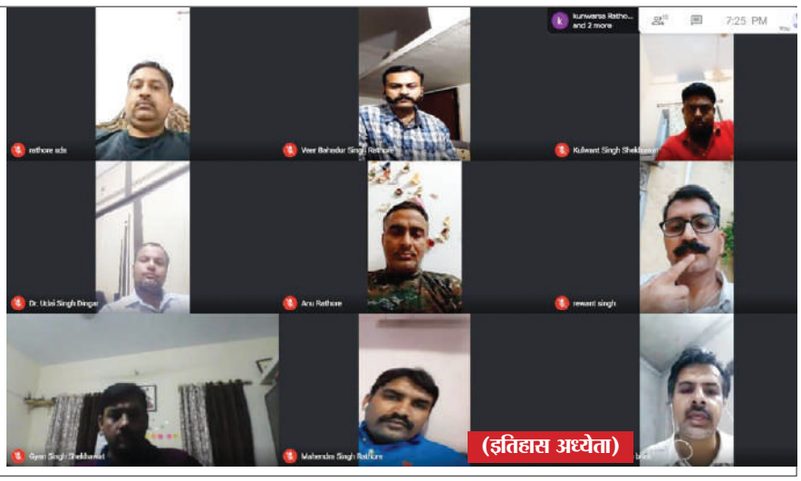
(इतिहास अध्येता)

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े सहयोगियों से निरन्तर सम्पर्क एवं समीक्षा हेतु ऑनलाईन बैठकों का दौर जारी है। 31 मई को अभी तक के विस्तार क्षेत्र में से सभी जिलों के चुनिंदा सहयोगियों के साथ एक बैठक आयोजित कर लॉकडाउन के बाद अब तक के कार्य की समीक्षा की गई। विधानसभा वार बने वाट्सएप समूहों की स्थिति का आकलन किया गया एवं उसमें प्रत्येक पंचायत से सहयोगी चिह्नित कर जोड़ने का आग्रह किया गया। उन समूहों में सार्थक चर्चा करने की भी बात की गई। फाउंडेशन के फेसबुक पेज पर प्रस्तावित लाईव कार्यक्रमों की योजना के बारे में बताया गया एवं उसमें अधिकतम लोगों को जोड़ने के लिए कहा गया। जिला सहयोगियों से कहा गया कि वे अपने स्तर पर विभिन्न समूहों में वीडियो कॉल के माध्यम से बैठकें करें। फाउण्डेशन के उद्देश्य की ओर बढ़ने के लिए पहला ही बिन्दु श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित होना है। इस हेतु संघ की केन्द्रीय शाखा जो प्रतिदिन वर्चुअल माध्यम से लग रही है, उससे जुड़ने के लिए भी सभी सहयोगियों से आग्रह किया गया। अभी भौतिक बैठकें संभव न होने के कारण फाउंडेशन के सभी बिन्दुओं को ऑनलाइन बैठकों के माध्यम से ही छूने की बात भी गई। अधिकतम सकारात्मक लोगों को किसी न किसी माध्यम से फाउंडेशन से जोड़ने की बात की गई। वाट्सएप समूहों में संविधान की प्रस्तावना में वर्णित मूलभूत तत्वों पर चर्चा करने की भी बात की गई। सरकारी योजनाओं के बारे में भी जिला स्तर पर वेबिनार आयोजित की गई। जिलेवार छात्र नेताओं की भी बैठकें करने का प्रस्ताव आया। 2 जून को जैसलमेर के सहयोगियों के साथ बैठक की गई। 4 जून को जालोर टीम के साथ बैठक की। 6 जून को बीकानेर टीम के साथ बैठक की एवं 7 जून को नागौर टीम के साथ चर्चा कर अलग-अलग दायित्व सौंपे गए। इसी दिन निजी बैंक में कार्यरत समाज बंधुओं से चर्चा की गई एवं इस क्षेत्र में नए लोगों को कैसे सहयोग किया जा सकता है, इस विषय पर बात की गई। 10 जून को जैसलमेर के कुछ नए सहयोगियों के साथ चर्चा की गई। 12 जून को इतिहास के कुछ प्रोफेसर्स के साथ एक ऑनलाईन बैठक की गई थी। विषय था इतिहास में तथ्य संकलन व तथ्यों का प्रस्तुतीकरण। उदयपुर से सुदर्शनसिंह, जयपुर से कुलदीपसिंह, जोधपुर से ज्ञानसिंह, जोधपुर विश्वविद्यालय की संगठक कॉलेज में कार्यरत चन्द्रवीर सिंह, महेन्द्रसिंह आदि ने इस बैठक में अपने विचार रखे एवं इस विषय पर कार्य करने की योजना बनाई। 31 मई को इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रोफेसर्स एवं आई.टी. क्षेत्र के इंजीनियर्स की एक बैठक रखी गई।

इंजीनियरिंग प्रोफेसर एवं इंजीनियर्स

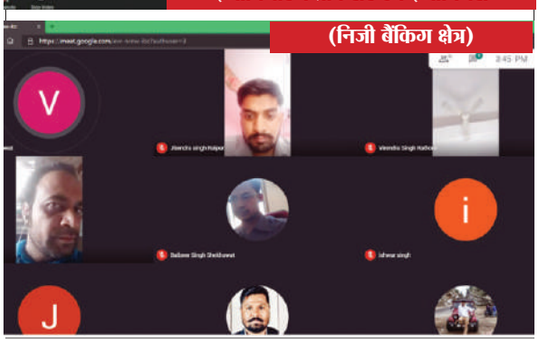
(निजी बैंकिंग क्षेत्र)

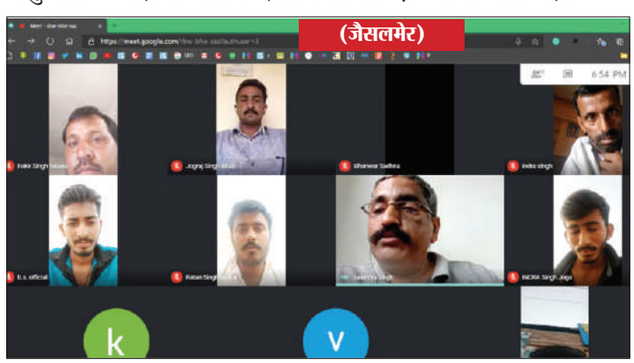
(जैसलमेर)

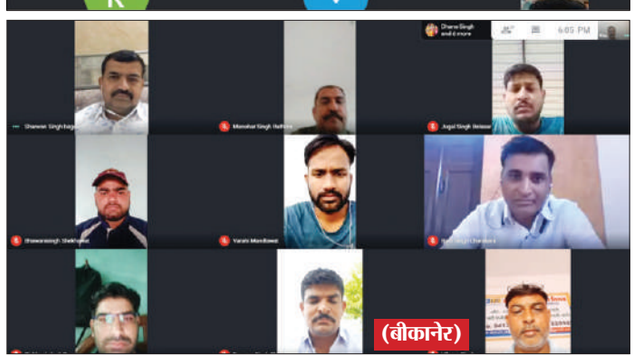
(बीकानेर)

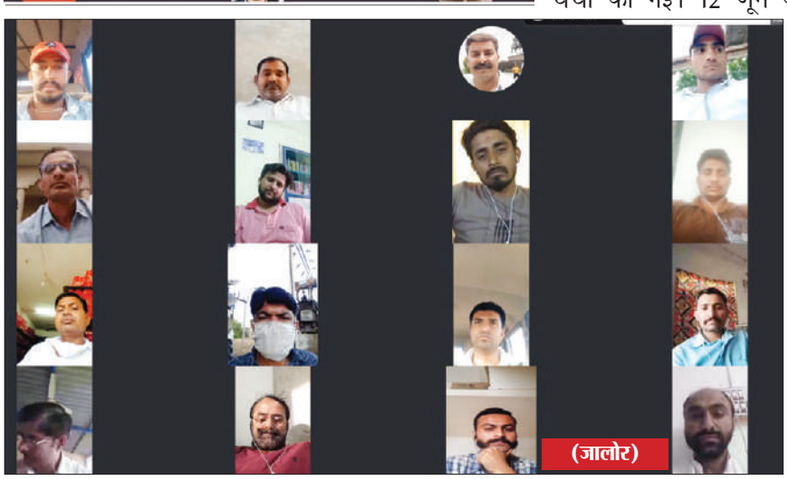
(जालोर)

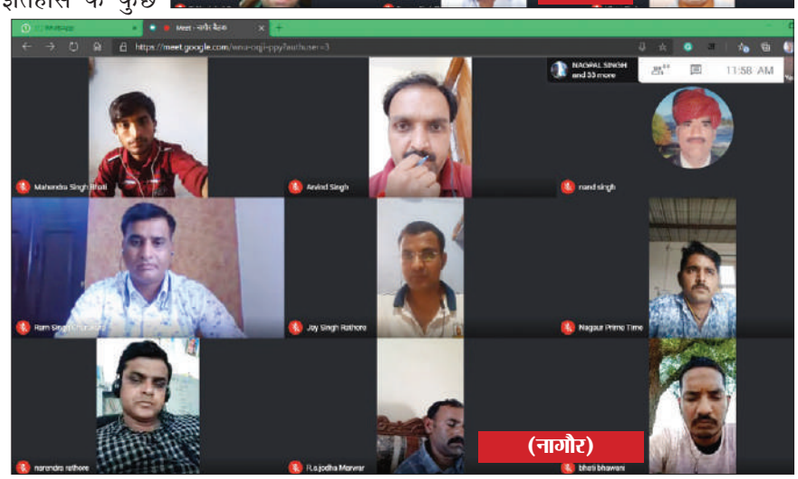
(नागौर)

संपादकीय

सम्मान, सहानुभूति और हम

सीमा पर दुश्मन से लड़ते हुए या देश के भीतर देश के दुश्मनों से लड़कर अपनी जान देने वाले शहीद सैनिकों का देश के लोग अतिशय सम्मान करते हैं, उनको अपना नायक मानते हैं, उनकी शहादत के दिन को सम्मान से याद करते हैं, उनके स्मारक भी बनाते हैं और हम भी देश के आम नागरिकों की भांति यही करते हैं। लेकिन क्या उन सैनिकों की संतानों को भी ऐसा ही सम्मान मिलता है? यदि हम इस बात की विवेचना करेंगे तो पाएंगे कि उनको ऐसा सम्मान नहीं मिलता लेकिन सहानुभूति अवश्य मिलती है। हर संजीदा व्यक्ति उस परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है, उनके अपने के विछोह की भावना में भागीदार बनने का प्रयास भी करता है लेकिन एक समय सीमा के बाद यह सहानुभूति क्षीण पड़ती जाती है। हम भी एक आम जन की भांति प्रायः ऐसा ही व्यवहार करते हैं। अब इसी विवेचना को हम हमारे पर लागू करें। हमारे पूर्वजों ने इस देश के बाहरी एवं भीतरी दुश्मनों से लड़ने में अपना सर्वस्व बलिदान दिया। यहां की सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से संचालित होती रहें इसके लिए अनिर्वचनीय त्याग भी किया। एक दो व्यक्ति ने नहीं किया बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परागत रूप से ऐसा ही किया इसलिए आम जनता हमें पीढ़ी दर पीढ़ी सम्मान देती रही। हमारे परिवारों में बलिदान की यह परम्परा रुकी नहीं बल्कि निरन्तर जारी रही इसलिए सम्मान का स्थान सहानुभूति ने नहीं लिया क्योंकि बलिदानों की श्रृंखला हर पीढ़ी में अटूट रही इसलिए सम्मान को सहानुभूति में बदलने का अवसर ही नहीं मिला। लगातार मिलने वाले इस सम्मान ने हमें भी सम्मान का अभ्यस्त बना दिया और हम यह मानने लगे कि हमें सम्मान मिलना ही चाहिए या यूं कहें कि सम्मान प्राप्त करने की आदत सी पड़ गई। लेकिन विगत लंबे समय से समाज की व्यवस्था को संचालित करने के लिए बलिदान होने की हमारी परम्परा कुंद हो गई। ऐसे में सम्मान का स्थान सहानुभूति ने ले लिया। आम आदमी आज भी हमारे पूर्वजों का सम्मान करता है, उनके स्मारकों को पूजता है, उनके बलिदान के आगे नतमस्तक भी होता है लेकिन हमारा अब वह सम्मान नहीं करता क्योंकि वर्षों पूर्व ही हमारे यहां बलिदान होने की परम्परा अब रुक सी गई है। सम्मान तो बलिदान का ही होता था, वह अब रहा नहीं तो सम्मान कैसा? लेकिन आमजन की सहानुभूति हमारे प्रति लंबे समय तक बनी रही और आज भी यत्र-तत्र देखने को मिल जाएगी। लेकिन हमारी तो आदत सम्मान पाने की रही है इसलिए हम तो सहानुभूति को भी सम्मान के रूप में लेते रहे। कालांतर में यह सहानुभूति भी क्षीण पड़ने लगी तो हम तिलमिलाने लगे और शिकायत भी करने लगे कि अब हमारा पहले जैसा सम्मान नहीं रहा। आमजन को अपने पूर्वजों का बलिदान भी हम याद दिलाने लगे कि हमारे पूर्वजों ने तुम्हारे लिए इतना सब कुछ किया तो तुम्हें हमारा सम्मान करना चाहिए लेकिन आमजन के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पूर्वजों ने किया तो पूर्वजों ने उनका सम्मान भी किया, आज हम भी कर रहे हैं लेकिन आपका सम्मान क्यों करें? आज के बुद्धिवादी युग में अमुक पढ़ा लिखा व्यक्ति आपका सम्मान केवल राजपूत होने के नाते क्यों करें? यह प्रश्न हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यदि हम राजपूत के रूप में सम्मान चाहते हैं, रजपूती के प्रतीक हमें भाते हैं, अच्छे लगते हैं तो हमें रजपूती को आमंत्रित भी करना पड़ेगा। यदि हमारे में रजपूती आएगी तो बलिदान भी आएगा, त्याग भी आएगा और ये सब आएंगे तो सम्मान बेचारा कहां रहेगा, उसको तो पीछे-पीछे छायां की भांति आना ही पड़ेगा। लेकिन यदि हम सहानुभूति को ही सम्मान मानकर उसे भी हमारा अधिकार मानेंगे तो एक विसंगति पैदा होगी जो हमारे को शेष संसार से असंबद्ध ही करेगी। फिर राजपूत कब सहानुभूति पर जिंदा रहने लगे? सहानुभूति तो एक प्रकार की दया ही है और रजपूती यदि दया की आकांक्षी हो जाती है तो फिर वह रजपूती नहीं रहती। इसलिए आज हमे इस वास्तविकता को स्वीकार कर लेना चाहिए कि केवल राजपूत के घर में जन्म लेने मात्र से हम सम्मानीय नहीं बन जाते और इसलिए केवल इस आधार पर सम्मान की किसी भी प्रकार की चाह हमारे लिए त्याज्य ही है। राजपूत के रूप में हमारा महत्व रजपूती के बिना संभव नहीं है और रजपूती साधना का विषय है, अर्जित करने का विषय है और कुछ अर्जित करना हो तो उसके लिए कीमत चुकानी पड़ती है। अपने आपको तैयार करना पड़ता है। उस तैयारी का काम ही श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। इसीलिए संघ महत्वपूर्ण होते हुए भी भौतिक प्राप्तियों के अर्जन के योग्य बनाने की अपेक्षा रजपूती को अर्जन करने के योग्य बनाने का प्रयास करता है। संघ का मानना है कि समस्त भौतिक प्राप्तियां रजपूती के सह उत्पाद हैं। यदि रजपूती आएगी, क्षत्रियत्व आएगा तो छाया की भांति शेष सभी उपलब्धियां स्वतः आ जाएंगी। इसलिए संघ अल्पकालिक प्राप्तियों के जाल में उलझाए बिना अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को रजपूती को अर्जित करने के दीर्घकालिक उपक्रम में संलग्न करता है।

खरी-खरी

भावनाएं, नारे और यथार्थता

आज देश की राजनीति नारों से पटी पड़ी है। आज ही ऐसा हुआ है ऐसा नहीं है, इनका भी एक लंबा इतिहास है। 'गरीबी हटाओ' से 'विदेशी भगाओ' तक के अनेक नारे इस देश की जनता सुनती आ रही है, भावनात्मक रूप से उनके पक्ष या विपक्ष में लामबद्ध होती रही है और यथार्थता से दूर केवल नारों के भरोसे हमारे राजनेता इस देश के भाग्य विधाता बनते रहे हैं।

हर नारा ना ही तो केवल कल्पना होता है और ना ही पूर्ण यथार्थ होता है। लेकिन राजनीतिक लोग हमारी भावनाओं को उससे जोड़कर अपना उल्लू सिद्ध करते रहते हैं और हम यथार्थता से दूर रहकर उस विरोध या समर्थन के चक्कर में जो उचित है उसे भी स्वीकार नहीं कर पाते। ऐसे ही कुछ नारे आज भी देश के वातावरण में तैर रहे हैं। हम लोग उनकी यथार्थता को स्वीकार किए बिना राजनीतिक पार्टियों की कुटिल चालों से विभाजित होकर पक्ष या विपक्ष में लामबद्ध होते रहते हैं। उदाहरण के लिए देश में चीन को लेकर एक वातावरण बन रहा है कि वह भारत पर धौंस जमाता है, भारत के खिलाफ उसके पड़ौसियों को लामबद्ध करने का प्रयास कर रहा है। इन सबके पीछे उसकी आर्थिक ताकत है और उस आर्थिक ताकत का कुछ अंश हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले चीनी उत्पादों से पैदा होती है। यह एक यथार्थ बात है लेकिन एक पक्ष इसके प्रचार पर अत्यधिक बल देकर तथाकथित राष्ट्रवाद के सहारे अपनी सत्ता को मजबूत करता है तो दूसरा पक्ष इसका केवल इसलिए विरोध कर रहा है कि उसे पहले पक्ष का विरोध करना है।

हम सब भी यथार्थता को जांचे बिना उपरोक्त विभाजन में विभाजित हो अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। जबकि यथार्थता यह है कि क्या आज के समय में सभी चीनी उत्पादों का बहिष्कार संभव है? क्या उन सभी उत्पादों का विकल्प हमारे पास उपलब्ध है? क्या हमारे पास उपलब्ध चीनी उत्पादों को एक झटके से हमारे द्वारा नकारा जा सकता है? यह संभव नहीं है लेकिन क्या कुछ भी संभव नहीं है? क्या इस बात में कोई सच्चाई नहीं है कि चीन के साथ हमारा विदेशी व्यापार अतिशय असंतुलित है और मैं मेरी क्षमता अनुसार यदि कुछ न्यूनतम भी कम करके इस असंतुलन को कम कर सकता हूं, तो क्या मुझे नहीं करना चाहिए? लेकिन पक्ष या विपक्ष द्वारा फैलाए गए भावनात्मक जाल में हम यथार्थता पर विचार नहीं करते और केवल नारों में उलझे रहते हैं। मैं कितना करता हूं या नहीं करता हूं इस बात पर विचार किए बिना राजनीतिक नेताओं द्वारा फैलाए गए जाल में फंसकर अनजाने में ही केवल उनके हेतु का साधन बनते जाते हैं। इसलिए हमें हर नारे को इस दृष्टिकोण से आंकना जरूरी है कि क्या यह शत-प्रतिशत संभव है और क्या यह बिलकुल संभव नहीं है? ये दोनों ही बातें नहीं हो सकती इसलिए जो संभव हो और जिससे तनिक भी राष्ट्रीय हितों का संपादन होता हो वह मुझे करना चाहिए। यही राष्ट्रीय भावना है। इसलिए आएं हम सब राजनीतिक भावना से राष्ट्रीय भावना की ओर अग्रसर होवें, राष्ट्रीय चरित्र की ओर अग्रसर होवें। केवल विरोध के लिए विरोधी न बनें और केवल भक्त बनने के लिए समर्थन न करें। विरोधी बनना है तो राष्ट्र के विरोधियों के विरोधी बनें और भक्त बनना है तो राष्ट्र के भक्त बनें। किसी राजनीतिक दल द्वारा हमारी भावनाओं का दुरुपयोग करने की नीयत से हमारे पवित्र प्रतीकों का उपयोग करना शुरू कर दिया गया है तो केवल प्रतीकों के बल पर उसके भक्त न बनें लेकिन साथ ही क्यों कि उस दल के लोगों के हम विरोधी है इसलिए हमारे अपने प्रतीकों के विरोधी भी न बनें।

राष्ट्र के प्रति हमारे समर्पण एवं उसके विरोधी तत्वों के प्रति हमारे विरोध का कोई अपने तुच्छ हितों के लिए उपयोग न कर सके इसके लिए हमें सावधान रहना जरूरी है। यही सावधानी हमारे नागरिक भाव को जागृत करेगी। यही सावधानी हमारी भावनाओं को विवेक के अधीन कर पाएगी। यही सावधानी हमें यर्थाथ से परिचित करवा पाएगी। ऐसी सावधानी से ही हम किसी राजनीतिक पार्टी के नहीं बल्कि राष्ट्र के कार्यकर्ता बन पाएंगे। यही सावधानी राजनीतिक पार्टियों को राष्ट्र के लिए साधन बना पाएगी। यही सावधानी हमारी प्राथमिकताओं की समुचित वरीयता निश्चित कर पाएगी।

साहूकारी व्यवसाय : रियासतों एवं ठिकानेदारों के ऐतिहासिक दस्तावेजों का महत्त्व

इतिहास निरन्तर शोध एवं पुनर्लेखन का विषय है। आधुनिक काल में इतिहास लेखन की परम्परा में हमारे प्रति नकारात्मक भाव वाले लोगों ने प्रधानता पाई और इस कारण हमारे महान पूर्वजों के जीवन के अनेक पक्ष अप्रकट ही रहे। वर्तमान में अनेक लोग इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं। प्रस्तुत आलेक राजस्थान विश्वविद्यालय में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत डॉ. कुलवंतसिंह शेखावत द्वारा राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के 32वें सेशन में दिसम्बर 2019 में प्रस्तुत किया गया था। इसे राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की तत्संबंधी प्रोसिडिंग्स में प्रकाशित भी किया गया है। उसी आलेख को यहां साभार पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। इस आलेख में लेखक ने साहुकारी व्यवसाय को जनता के निर्बाध शोषण के हथियार बनने से रोकने के लिए तात्कालिक शासकों द्वारा किए गए उपाय तत्संबंधी दस्तावेजों के आधार पर बताए हैं :

देशीय वित्तीय व्यवस्था में साहूकारों की बोहरगत बहियां साहूकारी व्यवसाय के संबंध में विभिन्न तथ्यात्मक सूचनाओं और व्यवस्थाओं पर प्रकाश डालती हैं। मेड़ता की लोकमणी संग्रह बहियां एवं नगर श्री चूरू में उपलब्ध पोद्दार सेठों की बहियां के दस्तावेजों से ऋणी ऋणदाता की सूचना ब्याज दरों ऋण वसूली के तरीकों एवं जमानती व्यवस्था की अच्छी जानकारी मिलती है। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में उपलब्ध विभिन्न रियासतों बीकानेर, जोधपुर राज्य की क्रशमः कागदों-री-बहियों और सानद परवाना बहियों के दस्तावेजों तथा राजस्थान अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में उपलब्ध मेवाड़ के बेदला पेपरस एवं रूपाहेली पेपरस नाम नामक संग्रह ठिकानों के दस्तावेजों से साहूकारी व्यवसाय के संबंध में रोचक एवं महत्त्वपूर्ण जानकारियां मिलती हैं जिसमें ऋणदाता के आपसी विवाद राज्य के द्वारा किए गए निर्णय, ऋणियों के हितों की रक्षा के लिए किए गए उपाय एवं ऋण वसूली के तरीके प्रमुख हैं।

बीकानेर राज्य के दस्तावेज : बीकानेर राज्य की कागदों-री-बहियां शासकीय आदेशों का एक अच्छा संग्रह है जिसमें शासन के आदेशों में सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास की भी जानकारी मिलती है। कागदों-री-बही नं. 33/2 में राज्य के द्वारा भादरा, छत्रगढ़, नोहर एवं रावतसर के हवलदारों को शासकीय पत्र भेजे गए। उसमें उन राजस्व अधिकारियों को भादवा बदी द्वितीया विक्रम संवत् 1884 (1827 ई.) में आदेश दिया गया कि वे ऋण वसूली की प्रक्रिया में सेठ के मुनीम गुमाश्तों की सहायता करेंगे। इन पत्रों से अडाण रखे गए राजस्व स्त्रोतों की प्रक्रिया की अच्छी जानकारी मिलती हैं। चिट्ठा खाता री बही नं. 1 एवं कागदों-री-बही नं. 33/2 में बीकानेर राज्य में छोटे साहूकारों द्वारा ऋण देने की प्रवृति दिखाई देती है जो 24 एवं 36 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर राज्य को ऋण उपलब्ध करवाते थे। कागदों-री-बही नं. 10 के पत्र के अनुसार अजकुमोणी री बहू के पूर्वजों का खेत अडाणे रखा हुआ था जबकि उसकी दयनीय एवं कमजोर स्थिति को देखते हुए दरबार ने साहूकार को रियायत बरतने की हिदायत दी।

जोधपुर राज्य के दस्तावेज : जोधपुर राज्य की सनद परवाना बही नं. 105 एवं 116 के विभिन्न दस्तावेजों से कई ऋण विवादों का उल्लेख मिलता है। जो साहूकारी व्यवसाय में प्रचलित नियमों प्रावधानों को रेखांकित करता है। राज्य के न्यायालयों द्वारा प्रचलित प्रावधानों के अनुसार निर्णय दिए थे। सनद परवाना बही नं. 105 में उल्लेख मिलता है कि जोधपुर राज्य के साहूकार बैणी राम के पास संवत् 1865 (1808 ई.) में तेली मुसता अल दादरी ने एक धान का कोठा (अनाज कोष्ठागार) अडाणे रखा था जिसे 1812 ई. में उसकी पुत्री अणदे ने अन्य साहूकार के पास गिरवी रख दिया था। इस पर जोधपुर राज्य ने साहूकार बैणी राम के पक्ष में निर्णय दिया। सनद परवाना बही नं. 116 में प्राप्त दस्तावेज के अनुसार राज्य की परबतसर कचेड़ी में एक विवाद आया जिसके अनुसार बगसीरात के पास हिन्दूमल की दुकान गिरवी थी। ऋण राशि चुकाने पर भी दूकान देने में बगसीराम इन्कार कर रहा था। राज्य की कचेड़ी ने बगसीराम को ऋण राशि लेकर हिन्दूमल को दुकान सौंपने का आदेश दिया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कल्याणी के चालुक्य

कल्याणी के चालुक्य वातापी के चालुक्यों की एक शाखा थी। कल्याणी के चालुक्यों में प्रारम्भिक शासकों का शासन बीजापुर और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों पर था। प्रारम्भिक शासक राष्ट्रकूटों के अधीनस्थ शासक के रूप में शासन करते थे। कल्याणी के चालुक्यों का स्वतंत्र राजनीतिक इतिहास तैलप द्वितीय से प्रारम्भ होता है। दसवीं शताब्दी के अन्त के आते-आते निर्बल शासकों के कारण राष्ट्रकूटों की स्थिति अत्यन्त कमजोर हो चुकी थी। बदलती राजनीतिक परिस्थितियों का तैलप ने लाभ उठाते हुए स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया और राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेत पर आक्रमण कर दिया। राष्ट्रकूट शासक कर्क युद्ध में मारा गया और मान्यखेत पर तैलप का अधिकार हो गया। राष्ट्रकूटों के अन्य सामन्तों को परास्त कर उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ की। दक्षिणी कोंकण के शिलाहारी वंशी शासक रट्ट को परास्त कर अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। उसने चोल शासक उतम चोल को भी परास्त किया। तैलप ने लाट प्रदेश पर भी अपना अधिकार जमाया। तैलप का मालवा के परमार शासक मुंज से भी दीर्घकालीन संघर्ष हुआ। प्रारम्भिक युद्धों में तैलप ने जब भी मुंज पर आक्रमण किया उसे पराजय का सामना करना पड़ा लेकिन अंतिम युद्ध में जब मुंज ने तैलप पर आक्रमण किया तो मुंज को युद्ध में पराजय का सामना करना पड़ा, उसे बंदी बना लिया गया और कारागर में उसका वध कर दिया गया। तैलप कल्याणी के चालुक्यों का प्रथम महान शासक था जिसने स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर उसका चतुर्दिक विस्तार किया। उसके शासनकाल में कन्नड़ भाषा का अत्यधिक विकास हुआ। उसने 997 ई. तक शासन किया। तैलप का उत्तराधिकारी उसका पुत्र सत्याश्रय हुआ। शासक बनने के बाद उसने अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया। उसने उत्तरी कोंकण के शासक अपराजित तथा गुर्जर नरेश चामुण्ड राज को परास्त किया परन्तु उसे परमार शासक सिन्धुराज और चोल शासक राजराज प्रथम के विरुद्ध असफलता का मुंह देखना पड़ा। सत्याश्रय ने 1008 ई. तक शासन किया। उसके बाद विक्रमादित्य पंचम और जयसिंह द्वितीय ने शासन किया। ये दोनों ही कमजोर शासक थे जिसके कारण कल्याणी के चालुक्यवंश की प्रतिष्ठा को धक्का लगा।

1043 ई. में सोमेश्वर प्रथम शासक बना, वह तैलप द्वितीय की तरह महत्वकांक्षी और योग्य शासक था। सर्वप्रथम उसने राजधानी मान्यखेत से कल्याणी स्थानान्तरित की। उसने कल्याणी में सुन्दर निर्माण कार्य करवाया जिससे कल्याणी संसार के प्रसिद्ध नगरों में शामिल हुआ। सोमेश्वर प्रथम के बारे में नान्देर (हैदराबाद) के लेख में जानकारी प्राप्त हुई है। वह एक महान विजेता था उसने मगध, कंलिग अंग, राज्यों पर विजय प्राप्त की। उसने परमारों की राजधानी धार पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की। सोमेश्वर प्रथम के चोलों के साथ दीर्घकालीन संघर्ष में अनेक युद्ध हुए जिसमें कभी सोमेश्वर को तो कभी चोलों को विजय प्राप्त हुई। सोमेश्वर ने गुजरात के शासक भीम तथा त्रिपुरी के कलचुरी शासक कर्ण को भी पराजित किया। सोमेश्वर प्रथम एक महान विजेता और साम्राज्य निर्माता था। चोलों के सिवाय उसे अन्य सभी युद्धों में विजय प्राप्त हुई। उसने खोई हुई चालुक्य शक्ति को पुनः प्रतिष्ठित किया। और 1068 तक शासन किया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

सेहत

युवा भी हो रहे हैं रीढ़ के विकारों से ग्रस्त

आज महानगरों की आरामपसंद जीवनशैली, गलत रहन-सहन, शारीरिक श्रम की कमी, बैठने व सोने के बेतुके ढंग, भीड़ भरी सड़कों पर अधिक समय तक गाड़ी चलाने आदि के कारण युवाओं में रीढ़ (स्पाइन) संबंधी बीमारी महामारी की तरह फैल रही है। आज बड़ी संख्या में युवा भी रीढ़ के विकारों से ग्रस्त हैं। रीढ़ की हड्डी में खराबी के कारण या तो पीठ या कमर में असह्य दर्द होता है या स्थिति बिगड़ने पर मरीज के पैर बेकार हो सकते हैं। आज यह बड़ी आम समस्या हो गई है।

स्लिप्ड डिस्क समस्या से हर व्यक्ति अपने जीवन काल में कभी ना कभी ग्रसित अवश्य होता है लेकिन पहली बार स्लिप्ड डिस्क होने वाले 10 लोगों में से केवल एक व्यक्ति को सर्जरी की जरूरत पडती है और नौ लोग बेडरेस्ट व दवाओं से ठीक हो जाते हैं। नई दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल के न्यूरो एंड स्पाइन डिपार्टमेंट के डायरेक्टर डा. सतनाम सिंह छाबड़ा के अनुसार वास्तव में डिस्क रीढ़ की हड्डी में लगे हुए ऐसे पैड के समान होते हैं, जो कि उन्हें किसी प्रकार के झटके या दबाव से बचाते हैं। शोधों से यह पता चलता है कि कई लोग सिर्फ स्लिप्ड डिस्क के कारण ही भयानक दर्द व तकलीफ का सामना करते हैं। हमारी रीढ़ की हड्डी के कारण ही हम सीधा चल पाते हैं। शरीर को अत्याधिक मोड़ने या गलत तरीक से झुकने से भी यह समस्या शरीर पर हावी होती है। कभी-कभी अपने सामर्थ्य से अधिक बोझ उठाने के कारण भी हम स्लिप्ड डिस्क को न्यौता दे बैठते हैं। इससे हमारी कमर, गर्दन व हिप्स पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शरीर में सुन्नपन या पैरालिसिस भी इसके दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

रीढ़ की हड्डी, जो कि शरीर के संदेश दिमाग तक पहुंचाती है या यूं कहिए कि शरीर का संप्रेसक होती है। रीढ़ की हड्डी शरीर में कमर की हड्डियों, लिगामेंट, मांसपेशियों व नस के माध्यम से शरीर में मोबिलिटी और सेंसेशन प्रदान करती है। वैसे भी रीढ़ की हड्डी को शरीर का पावर हाउस माना जाता है जो कि शरीर को स्थिर कर सिर, बांह व पैरों को सहयोग कर चलायमान बनाती है। डा. सतनाम सिंह छाबड़ा के अनुसार दरअसल स्लिड डिस्क ऐसी बीमारी है जिसे समझने के लिए रीढ़ के बनावट के बारे में जानना जरूरी है। हमारी रीढ़ की हड्डी प्रायः 33 हड्डियों के जोड़ से बनती है और प्रत्येक दो हड्डियां आगे की तरफ एक डिस्क के द्वारा और पीछे की तरफ दो जोड़ों के द्वारा जुड़ी रहती है। यह डिस्क प्रायः रबड़ की तरह होती है जो इन हड्डियों को जोड़ने के साथ-साथ उनको लचीलापन प्रदान करती है। स्लिड डिस्क और कमर दर्द से जुड़ी बीमारियों की पहचान है। कमर से लेकर पैरों में जाता हुआ दर्द जिसके साथ ही साथ पैरों का सुन्न या भारी होना या चीटियां चलने जैसा एहसास भी हो सकता है। आगे चलकर दर्द के मारे चलने में असमर्थ और कई बार लेटे-लेटे भी कमर से पैर तक असहनीय दर्द होता रहता है।

इस समस्या से निजात पाने के लिए चार से छः सप्ताह का समय लगता है। कई बार व्यायाम व दवाइयां भी बहुत मददगार साबित होती हैं। यदि मरीज को अत्यधिक पीड़ा हो तो 2-3 दिन तक बेड रेस्ट करने की सलाह दी जाती है। इस तरह स्लिप्ड डिस्क से जूझने के कई तरीके उपलब्ध हैं। ऐसी अवस्था तब उत्पन्न होती है जब डिस्क का अंदरूनी भाग बाहर की तरफ झुकने लगता है। स्लिप्ड डिस्क के लक्षण और इसमें होने वाला नुकसान इस पर निर्भर करता है कि डिस्क का झुकाव कितना हुआ है। डा. सतनाम सिंह छाबड़ा के अनुसार नसों में एक अजीब प्रकार का खिंचाव व झनझनाहट स्लिप्ड डिस्क का एक बड़ा लक्षण है। यह झनझनाहट पूरी नस में दर्द उत्पन्न करती है जो कि अति कष्टदायक होता है। इसके अलावा प्रभावित जगह पर सूजन होना भी इस दर्द को और अधिक जटिल बना देता है।

इलाज

स्लिप्ड डिस्क के इलाज के लिए कई बार सर्जरी भी करनी पड़ती है। कई बार व्यायाम या दवाइयां जहां कारगर नहीं होती हैं वहां सर्जरी करना आवश्यक हो जाता है। डिस्क से जुड़े भाग जो कि बाहर की तरफ आने लगते हैं उन्हें ठीक करना इस सर्जरी का लक्ष्य होता है। इस प्रक्रिया को डिस्केटोमी के नाम से जाना जाता है। लेकिन सर्जरी का भी सर्वश्रेष्ठ विकल्प हैं - इंडोस्कोपिक डिस्केटोमी। इस शल्य चिकित्सा के अंतर्गत स्पाइन तक पहुंच कायम करने के लिए एक बहुत ही छोटा चीरा लगाया जाता है। डिस्क को देखने के लिए इंडोस्कोप की सहायता ली जाती है। यह एक पतली, लंबी ओर लोचदार होती है जिसके एक किनारे पर प्रकाश स्रोत और कैमरा लगा होता है। डा. सतनाम सिंह छाबड़ा के अनुसार एनेस्थिसिया लोकल हो अथवा जनरल यह इस बात पर निर्भर करेगा कि स्लिप्ड डिस्क आपके स्पाइन में कहां है। चीरा लगाकर इंडोस्कोप से देखते हुए उस तंत्रिका को मुक्त कर दिया जाता है जिसके कारण दर्द हो रहा था। एक अन्य अध्ययन के अनुसार औसतन सात सप्ताह बाद लोग अपनी दिनचर्या फिर से शुरू करने लायक हो गए।

कमर दर्द से बचने के कुछ टिप्स-

व्यायाम करते समय यह हमेशा याद रखें कि आप जो भी व्यायाम करें वह अधिक जटिल न हो और उसे करने से आप की कमर पर अधिक दबाव न पड़ें। उदाहरण के लिए जब आप तैराकी करते हैं तो आप के घुटनों पर अधिक दबाव पड़ता है और पानी आप के शरीर को सहयोग करता है। लेकिन अधिक समय तक बैठे रहने से आप के कमर दर्द की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में दर्द बढकर आप के हिप्स तक पहुंच सकता है। उठने-बैठने के ढंग में परिवर्तन करें। बैठते वक्त सीधे तन कर बैठें। कमर झुकाकर या कूबड़ निकालकर न बैठें और न ही चलें। यदि बैठे-बैठे ही अलमारी की रैक से कुछ उठाना है तो अंगों की ओर झुककर ही वस्तु उठाएं. अपनी क्षमता से अधिक वजन न उठाएं। नरम या गुदगुदे से बिस्तर पर न सोएं बल्कि सपाट पलंग या तख्त पर सोएं। ताकि पीठ की मांसपेशियों को पूर्ण विश्राम मिले। वजन को हरगिज न बढने दें, भले ही इसके लिए आप को डायटिंग या व्यायाम ही क्यों न करना पड़े. तनाव की स्थितियों से बचें। चिंता दूर करने के लिए खुली हवा में टहलें।

(पृष्ठ पांच का शेष)

साहूकारी व्यवसाय...

ठिकानेदार के दस्तावेज : ठिकानेदार अपने ठिकाने क्षेत्र में कुछ विशेषाधिकार रखते थे। वे न्यायिक शक्तियां भी रखते थे जिससे अपने क्षेत्र की व्यवस्था बनाए रख सकें। इसी परिपेक्ष्य में ठिकाने की आर्थिक गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित रहे, इस हेतु ठिकानेदार ने साहूकारों को इस प्रकार के निर्देश दिए जो साहूकारी व्यवसाय के प्रावधानों के इतर आदेश थे। फिर भी ठिकानेदार द्वारा मानवीय आधार पर ऐसी व्यवस्था थी जिससे ऋणी के हितों की सुरक्षा के साथ साहूकारी व्यवसाय भी चलता रहे। बेदला ठिकानेदार के विक्रम संवत् 1827 एवं 1908 के परवानों में क्रमशः साहूकार गुमान बोहरा को जुणदा गांव के चतुर्भुज चमार का उसका खेत सौंपने का आदेश दिया एवं रामगढ़ शाह धन्ना सुराणा के पास कालू जै सिंह की दुकान गिरवी थी, वह गांव छोड़कर चला गया तब ठिकानेदार ने उसे पुनः बुलाया और साहूकार धन्ना सुराणा को उससे सवा रुपया प्रतिमाह की किश्त में वसूलने के निर्देश दिए।

इससे स्पष्ट है कि ठिकानेदार अपने क्षेत्र के कृषक एवं छोटे व्यापारियों के हितों की रक्षा के लिए विशेष परिस्थितियों में ऐसे निर्देश देते थे। इस तरह परम्परागत साहूकारी व्यवसाय के संबंधित इन दस्तावेजों से ऋण वसूली की प्रक्रिया, न्यायिक विवादों राज्य की भूमिका और ऋण प्रणाली की सामाजिक पृष्ठभूमि की अच्छी जानकारी मिलती है।

सूचना तकनीक (IT) क्षेत्र में कार्यरत हमारे सहयोगी बंधुओं ने समाज के नये लोगों को इस क्षेत्र में सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए एक मेल आई डी skpf.tech@gmail.com जारी की है। जिन लोगों को इस संबंध में मार्गदर्शन चाहिए वे अपना विवरण इस मेल आई डी पर भेज कर सहयोग ले सकते हैं।

प्रणाम, प्रमाण, परिणाम

प्रतिज्ञाबद्ध भीष्म के सिहांसनारूढ
हस्तिनापुर भूप में,
पिता की छवि के दर्शन के
'प्रण' को प्रणाम।
आचार्य कृप, द्रोण की शिक्षा-दीक्षा,
युद्ध-धर्मनीति में प्रवीण
भाला, गाण्डीव, गदा, कृपाण को प्रणाम।
धर्मयुद्ध में 'मधुसूदन' धर्म के
सारथी की भूमिका में,
कुरूक्षेत्र के मध्य गीता के उपदेश
'कर्म' को प्रणाम।
शिवभक्तिनी गांधारी को सौ पुत्रों
के वरदान में,
सतीत्व की अनूठी रवानी बंधाती
'पट्टी' को प्रणाम।।

***

द्रोपदी वस्त्र हरण कुदृश्य पे मौन
हस्तिनापुर दरबार में,
परिवेदना, याचना करती 'विदुर नीति'
का प्रमाण ।
कौन्तेय-राधेय द्वारा इन्द्र को लौटाते
कवच-कुण्डल में, लहुलुहान स्कन्ध,
दानवीर कर्ण की 'दानवीरता' का प्रमाण।
अनायास, अकारण अपमानित
अम्बा के श्राप में,
ऋणवश भीष्म, मृत्यु-कारण बनते
'शीखण्डी' का प्रमाण ।
निहत्थे अभिमन्यु पर वार कर युद्ध
नियमों के उल्लंघन में,
शामिल महारथियों के वार की
ढाल 'चक्र' का प्रमाण।।

***

पांचाली के लिए जंघा पीटते
दुर्योधन के दम्भ में,
कर्ण-जिह्वा, दुशासन के हाथों में
'अपमान' का परिणाम।
मातृभूमि की अपेक्षा भीष्म-प्रतिज्ञा
को तवज्जो में,
बाणों की शय्या से आलिंगन करती
'प्रतिज्ञा' का परिणाम ।
अन्यायवश तेरह वर्ष वनवास,
एक वर्ष अज्ञातवास में,
अपमानित खुलें केशों से धधकती
'ज्वाल' का परिणाम ।
ये महासंग्राम जो कुछ है संसार,
जो कुछ है संसार में,
वेदव्यास की धर्मयुद्धकथा का
'शांति संदेश' बना परिणाम।

सुमन बेदाना

नेताओं का नंगा नाच

राज्यसभा के चुनावों की प्रक्रिया में हमें फिर से नेताओं का नंगा नाच दिखाई दे रहा है। हम ने हमारा मत देकर जिनका अस्तित्व बनाया अथवा यूं कहे कि हमारे अस्तित्व (मत) को सौंपकर एक बड़ा अस्तित्व बनाया, उस अस्तित्व की बोली लगाई जा रही है। हमारे विश्वास (मत) के वे ट्रस्टी (विश्वासी) आज सर्वाधिक अविश्वसनीय (अनट्रस्टी) बन गए हैं तब ही तो उनको भेड़ों की तरह बाड़े में बंद कर चौकीदार बिठाए गए हैं। हम उस पीढ़ी के लोग हैं जिनको यह नंगा नाच देखने का अवसर प्रायः मिलता रहता है। कभी वह ग्राम पंचायत में सरपंच के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव गिराने या पास करवाने के लिए वार्डपंचों की बोली या बाड़ेबंदी के रूप में दिखाी देता है तो कभी नगरपालिकाओं में। ग्राम पंचायतों और नगर निकायों से निकल कर यह नंगा नाच देश और प्रदेश के रंगमंच पर भी प्रायः आयोजित होता रहता है। आजकल सरकारें जनता के बहुमत से नहीं बल्कि विधायकों की संख्या जुटाने के लिए सभी प्रकार के बलों के प्रबंधन से बनती हैं। वैसे तो सत्ता का नाच नंगा ही होता है। सत्ता के गलियारों में षड्यंत्र एवं उठापटक सदैव से होते रहे हैं इसलिए राजनीति के दांव पेंच जानने वाले लोगों को यह अस्वाभाविक भी नहीं लगता लेकिन जब ये सफेदपोश राजनेता मीडिया में आकर या समाचार चैनलों के माईक के सामने आकर नैतिकता की बातें करते हैं या नैतिकता के आधार पर सामने वाले पर आरोप लगाते हैं तो यूं लगता है कि संसार के सर्वाधिक झूठे व्यक्ति से सामना हो रहा है।

साथ ही पुराने समय में होने वाले षड्यंत्र उनके स्वयं के बल पर हुआ करते थे, षड्यंत्रकारियों के बीच कोई एक सच्चा नायक जरूर होता था जिसके प्रति जनता की शुभकामनाएं भी होती थी जिनके बल पर प्रायः वह षड्यंत्रों को पार भी कर जाता था। लेकिन आज तो कुछ हो रहा है जनता के नाम पर हो रहा है, जनता से बल लेकर हो रहा है, जनता के विश्वास के हासिल कर उस विश्वास के बल पर हो रहा है और फिर निर्लज्जता पूर्वक अपने आपको सार्वजनिक रूप से पाक साफ घोषित करने का उपक्रम भी हो रहा है। आज कौन ऐसा नेता बचा है जो अपने चारों तरफ खड़े किए गए प्रचार के आभा मंडल से बाहर निकल कर यह दांवा कर सकता है कि जनता में उसके प्रति सद्भावना बची है? शायद दावा करने वाले तो अनेक मिल जावेंगे क्यों कि उसमें तो क्या लगता है, केवल मीडिया में आकर बयान ही देना है, लेकिन वास्तविकता कितनी है, यह हम सब जानते हैं। आज सर्वाधिक अविश्वसनीय प्राणी नेता है और व्यवस्था की विडंबना देखें कि सर्वाधिक अविश्वसनीय लोग जनता के विश्वास (मत) से पैदा होते हैं। कोराना संकट के दौरान हमने देखा कि नित्य हमारे नेताओं द्वारा अपीलें हो रही थी, लेकिन कितने मजदूरों ने उन पर विश्वास किया? क्यों वे पैदल ही एक लंबे सफर पर निकल गए जो उनके जीवन का अंतिम सफर बन सकता था और अनेकों अनेक लोगों का बना भी। यह दर्दनाक कहानी क्यों घटित हो गई जबकि हमारे नेता तो नित्य मीडिया में समस्त प्रकार की व्यवस्थाएं करने की बातें कर रहे थे और जहां हैं वहीं रुकने की अपीलें कर रहे थे? क्यों कि ये सभी नेता नंगे हैं और बेशर्मी से अपने नंगे नाच को सार्वजनिक पटल पर प्रदर्शित कर भी दांवा करते हैं कि ये नंगे नहीं है?

ऐसे में ऐसे झूठे लोगों पर कौन विश्वास करें खैर यह तो समस्या का चित्रण है, उपाय क्या हो? क्या व्यवस्था बदलना इसका कोई उपाय है? नहीं, यह व्यवस्था ही उपाय होती तो वह भी अनेक बार बदलती रही है और अभी बदले हुए पूरे सौ साल भी नहीं हुए है। व्यवस्था का जीवन इतना छोटा नहीं होता, यदि व्यवस्था बदलने से हल होता तो हो चुका होता लेकिन उपाय व्यवस्था बदलना नहीं, व्यक्ति बदलने से भी नहीं बल्कि व्यक्ति का व्यक्तित्व बदलने से होता है। व्यक्ति का चरित्र बदलने से होता है। व्यक्ति का अन्तर बदलने से होता है। जब तक हम उस अंतर बदलने की प्रक्रिया में गति नहीं लाएंगे तब तक इस प्रकार के नंगे नाच देखने को मिलते रहेंगे। नंगे लोगों का नाच नंगा ही होगा उनसे साफ सोच की अपेक्षा करना बचपना है। इसलिए आए व्यक्ति बदलने की दीर्घ सूत्री योजना में शामिल होकर काल के इस खंड में अपनी सार्थक भूमिका निभाएं।

(पृष्ठ एक का शेष)

केन्द्रीय...

उनके द्वारा प्रबल कर्म प्रवाह के लिए आवश्यक संघर्ष व शक्ति, दूरगामी उद्देश्य और गीता, तर्क और कायरता, उद्देश्य की महानता और बाधाओं की शक्ति, गीता के मार्ग की सरलता, गीता के ज्ञान की पात्रता, कर्म के पांच कारण, भौतिक और आध्यात्मिक कर्म, योग क्षेम वहन, संघ की अभिनव तपस्या, विभूतियों का अवतरण, पतन की प्रक्रिया, संन्यास और गीता, गीता की साधना और बाह्य परिस्थितियां, क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म, महान सिद्धान्तों का अभ्यास और खेल, सांघिक साधना और गीता ज्ञान, कर्म का स्थूल स्वरूप और उसमें निहित भावना, गृहस्थ और गीता संघ और पीड़ा, लक्ष्य निर्धारण या स्वीकृति, गुण, स्वभाव व प्राकृतिक क्षत्रियत्व व दानवत्व, त्रिगुणात्मकता एवं द्वंद्वात्मकता, संघर्ष और प्रगति, रज की सृष्टि और उसका सत्वोन्मुख होना आदि विषयों पर विस्तार से विवेचना की गई एवं तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए गए।

विभिन्न विषयों...

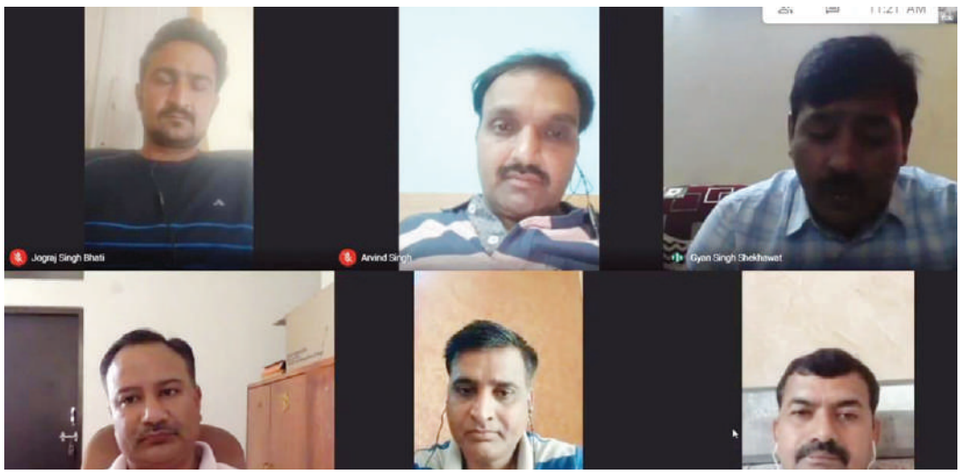

क्यों कि यदि आप जो जानते हैं उसे प्रकट नहीं कर पाते तो आपका चयन नहीं हो पाता। यदि कॉलेज के दौरान ऐसा नहीं करते हैं तो डिग्री के बाद इस विषय पर समय लगाना पड़ेगा। दूसरी बात समस्या समाधान की योग्यता के लिए भी आवश्यक बिन्दुओं के बारे में बताया। तीसरे बिन्दु के लिए कॉलेज अध्ययन के दौरान अपने विषय पर विशेष ध्यान देने की बात कही। इस बाबत फेसबुक लाईव देख रहे संभागीयों एवं बैठक में शामिल संभागीयों द्वारा प्रश्न पूछे गए एवं उनके भी जवाब दिए गए। प्रश्नों के जवाब देने में नरेन्द्रसिंह छापरी व दीपेन्द्रसिंह पलाड़ा ने सहयोग किया।

नरेन्द्रसिंह छापरी ने पवनसिंह के मार्गदर्शन में कार्य कर रहे इंजीनियर्स की टीम द्वारा नए इंजीनियर्स के सहयोग के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। दीपेन्द्रसिंह ने बताया कि सूचना तकनीक में किसी भी प्रकार का मार्गदर्शन चाहने वाले विद्यार्थियों को अपना विवरण इसके लिए बनाई गई मेल आई.डी. skf.tech@gmail पर भेजना चाहिए। उनकी व्यक्तिगत मॉनीटरिंग करने का प्रयास किया जाएगा। फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगी यशवर्धनसिंह एवं रामसिंह चरकड़ा ने भी ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में बताया। 14 जून को शिक्षा के अवसर एवं छात्रवृत्तियां विषय पर वेबिनार आयोजित की गई जिसमें जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के प्रोफेसर ज्ञानसिंह शेखावत (बगड़) ने शिक्षा के क्षेत्र के उपलब्ध विभिन्न छात्रवृत्तियों के बारे में प्रारंभिक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 5वीं कक्षा से लेकर पी.एच.डी. तक हजारों प्रकार की छात्रवृत्तियां मिलती है। इनमें भारतीय एवं विदेशी दोनों प्रकार की छात्रवृत्तियां शामिल हैं। अनेक निजी औद्योगिक घरानों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा भी विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियां उपलब्ध करवाई जाती है। महिलाओं के लिए अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियां उपलब्ध हैं। विशेष योग्यजन के लिए भी ऐसी ही छात्रवृत्तियां हैं। खिलाड़ियों के लिए भी अनेक अवसर है। यदि एकल बालिका संतान है तो उसके लिए विशेष प्रकार की छात्रवृत्तियां हैं। अनेक छात्रवृत्तियां तो एक मध्य वर्गीय परिवार की कुल आय के बराबर है। वेबिनार में यह भी स्पष्ट किया गया कि यह सब प्रयास समाज के लोगों में इनकी भूख जगाने के लिए है। शेष तो हमें अपने स्तर पर जानकारी हासिल कर लाभ लेना होगा। यह वेबिनार केवल प्रारंभिक जानकारी के लिए थी। भविष्य में अलग-अलग स्तर की छात्रवत्तियों के बारे में अलग से ऐसे कार्यक्रम आयोजित की जाएगी।

(पृष्ठ दो का शेष)

लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार में प्राप्त अंको के आधार पर अंतिम परिणाम तैयार किया जाता है तथा सफल अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण हेतु चुना जाता है।

विस्तृत जानकारी के लिए upsc.gov.in को विजिट करें।

दशरथसिंह व गणेशसिंह को भ्रातृशोक

संघ के स्वयंसेवक दशरथसिंह व गणेशसिंह तोलियासर के बड़े भ्राता **नवरंगसिंह** (नरपतसिंह) का 8 जून को देहावसान हो गया। इनके पिता स्व. भंवरसिंह जी तोलियासर भी संघ के स्वयंसेवक थे। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के प्रार्थना करता है एवं संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नवरंगसिंह

नागौर के राजपूत प्रतिनिधियों के पक्ष में ज्ञापन

आसीन्द

बीकानेर

सरवाड

फतेहगढ़

मेड़ता

नागौर

रामसर

रानीवाड़ा

सुमेरपुर

नागौर जिले के राजपूत जनप्रतिनिधियों को सत्ता बल या बाहुबल के आधार पर दबाने, डराने या धमकाने की विगत दिनों में अनेक घटनाएं हुईं। पलाड़ा सरपंच को सत्ता के बल पर निलंबित किया गया। पंचायत चुनाव के दौरान हमारे समाज के अनेक प्रत्याशियों पर हमले किए गए। रसाल गांव में हुई ऐसी घटना की तो पुलिस द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट ही नहीं दर्ज की गई और ऐसे में न्यायालय के माध्यम से केस दर्ज किया गया। 7 जून की रात्रि को रूण गांव में रही सरपंच प्रत्याशी के परिवार पर संगठित हमला किया गया। इन सब घटनाओं को लेकर श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा मुख्यमंत्री महोदय के नाम ज्ञापन सौंपे गए एवं मांग की गई कि नागौर जिले में राजपूतों के चुनाव लड़ने के संवैधानिक अधिकार पर हो रही निरंतर चोट को रोका जाना चाहिए। साथ ही मुख्यमंत्री जी से भी यह भी निवेदन किया गया कि क्या ऐसी परिस्थितियां एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए समीचीन हैं? ज्ञापन से पूर्व मुख्यमंत्री कार्यालय को फाउण्डेशन के सभी सहयोगियों द्वारा मेल किए गए। ऐसे सैंकड़ों मेल एक ही दिन में किए गए। 9 जून को ज्ञापन देने का कार्यक्रम रखा गया जिसमें नागौर, परबतसर, कुचामन, मकराना, डीडवाना, लाडनूं, डेगाना, जायल, मेड़ता, बाड़मेर, चौहटन, सिवाना, रामसर, शिव, बीकानेर, नोखा, बज्जू, जैसलमेर, मोहनगढ़, फतेहगढ़, मारवाड़ जंक्शन, रानी, सुमेरपुर, आसींद, बापिणी आदि स्थानों पर ज्ञापन दिए गए। 10 जून को खींवसर, बाली, केकड़ी, बालोतरा, गुड़ामालानी, बायतु आदि स्थानों पर ज्ञापन देकर प्रशासन के माध्यम से इस विषय को सरकार तक पहुंचाया। इसके बाद जालोर, रानीवाड़ा, जैतारण, रायपुर आदि स्थानों पर भी ज्ञापन दिए गए। मीडिया के माध्यम से भी विषय को उठाया गया।

बाली

गुड़ामालानी

बालोतरा

जैसलमेर

8 जून/बलिदान-दिवस

महान शूरवीर बंदासिंह बहादुर

बन्दा बैरागी का जन्म एक राजपूत परिवार में 27 अक्टूबर, 1670 को ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी पर तीर चला दिया। इससे उसके पेट से एक शिशु निकला और तड़पकर वहीं मर गया। यह देखकर उनका मन खिन्न हो गया। उन्होंने अपना नाम माधोदास रख लिया और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिये। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे। इसी दौरान गुरु गोविन्दसिंह जी माधोदास की कुटिया में आये। उनके चारों पुत्र बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़कर देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा।

गुरु गोविंदसिंह ने कहा कि 'तुम एक क्षत्रिय हो और क्षत्रिय होकर अपना क्षात्रधर्म भुलाकर इस तरह से जंगल में कैसे बैठे हो..? जब देश और धर्म को तुम्हारी सबसे अधिक आवश्यकता है तब इस तरह से कर्तव्य से विमुख होकर एकांत में स्वयं के कल्याण की साधना करना तो उचित नही।' इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गुरुजी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। फिर पांच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा।

बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिये। उन्होंने सबसे पहले गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी। उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने बड़ी फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से 17 दिसम्बर, 1715 को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्दकर, हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख भी कैद किये गये थे। इनमें बन्दा के वे 740 साथी भी थे, जो प्रारम्भ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाए सिखों के सिर काटकर उन्हें भाले की नोक पर टाँगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा बैरागी का माँस नोचा जाता रहा। काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा; पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में आज जहां हार्डिंग लाइब्रेरी है,वहां 7 मार्च, 1716 से प्रतिदिन सौ वीरों की हत्या की जाने लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा -तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किये, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है ? बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया -मैं तो प्रजा के पीड़कों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था। क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है। बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं ? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता; क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है। यह सुनकर सब ओर सन्नाटा छा गया। भयभीत करने के लिए उनके पांच वर्षीय पुत्र अजय सिंह को उनकी गोद में लेटाकर बन्दा के हाथ में छुरा देकर उसको मारने को कहा गया। बन्दा ने इससे इन्कार कर दिया। इस पर जल्लाद ने उस बच्चे के दो टुकड़ेकर उसके दिल का मांस बन्दा के मुँह में ठूंस दिया; पर वे तो इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। गरम चिमटों से मांस नोचे जाने के कारण उनके शरीर में केवल हड्डियां शेष थी। फिर भी आठ जून, 1716 को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org